>

Title: Need to provide adequate water from river Ganges to Bihar and accord sanction for setting up Thermal Power Plants in the State.

श्री जगदानंद सिंह (बक्सर): सभापति महोदया, बिहार के साथ कितनी नाइंसाफी हो रही है, मैं उसे आपके सामने रखना चाहता हूं। गंगा नदी बिहार से होकर गुजरती है और उसकी त्रासदी बिहार के लोगों को झेलनी पड़ती है, लेकिन गंगा नदी के पानी का उपयोग बिहार न सिंचाई में, न थर्मल पावर बनाने में और न अन्य किसी उद्योग धंधे के लिए इस्तेमाल कर सकता है। रुकावट डाली जा रही है, जबकि गंगा नदी में उसकी जिन सहायक नदियों से पानी आना है, उसमें सबसे अधिक पानी बिहार की गंडक, कोसी, महानंदा और बागमती से आता है। भारत सरकार की वाटर रिसोर्सेस मिनिस्ट्री का कहना है कि हम इस पानी का इस्तेमाल सामान्यतः नहीं कर सकते हैं।

महोदया, मैं इस बात को सदन में इसलिए रखना चाहता हूं कि बिहार के सारे संसाधन छीन लिए गए हैं। बिहार की प्रगति जिस पर आधारित है, उसके विकास के लिए गंगा के पानी की आवश्यकता है। जब फरक्का के बारे में बंगलादेश और भारत से समझौता हो रहा था, तब मैंने वाटर रिसोर्सेस मिनिस्टर की हैसियत से इस सवाल को उठाया था कि हमारी नदियों के पानी को न छीना जाए।

महोदया, बक्सर, जहां से गंगा नदी, बिहार की सीमा में प्रवेश करती है, वहां जितना पानी अन्य नदियों से आना है, उसका गंगा की मुख्य धारा से 10 फीसदी भी पानी नहीं आ रहा है। गंगा नदी का जितना भी पानी आज फरक्का तक जा रहा है, उसमें 80 फीसदी पानी बिहार की नदियों का है, जबकि हमें केवल 30 प्रतिशत का कंट्रीब्यूशन देना था। बिहार का पानी है और गंगा नदी बिहार से गुजरती है, लेकिन बिहार की 9 करोड़ से अधिक आबादी उसका इस्तेमाल नहीं कर सकती है। अगर हमारे विकास के लिए हमें गंगा नदी के पानी का प्रयोग करने से रोका जाएगा, तो बिहार कैसे आगे बढ़ेगा? अभी तक बिहार का बहुत नुकसान हो चुका है। यदि ऐसा ही चलता रहा, तो देश के सबसे गरीब और पिछड़े राज्य बिहार का और नुकसान होगा।

महोदया, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से निवेदन और मांग करना चाहता हूं कि भारत को यदि आगे बढ़ना है और बिहार को आगे बढ़ाना है, तो बिहार को गंगा नदी के पानी के उपयोग हेतु भारत सरकार सहमति प्रदान करे।